बच्चे

तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे बच्चे नहीं हैं
वे जीवन के अपने ही प्रति इच्छा के बेटे और बेटियां हैं
हालांकि वे तुम्हारे साथ हैं, तुम्हारे नहीं हैं।
तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो,
अपने विचार नहीं,
क्योंकि उनके पास अपने विचार हैं।
तुम उनके जिस्म को घर दे सकते हो,
उनकी आत्मा को नहीं,
क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल के घर में बसती है।
जहां तुम सपनों में भी नहीं जा सकते।
तुम उन जैसे बनने की कोशिश कर सकते हो,
पर उन्हें अपने जैसा बनाने की कोशिश न करो।
क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं चलता,
न पीछे छूट चुके कल पर ठहर सकता।
तुम वो कमान हो जिससे तुम्हारे बच्चे
जिंदा तीरों की तरह चल चुके हैं।

खलील जिब्रान